जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – नवंबर 2025 ।। अंक – 64 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

संगीता दीदी :
समूह की सहायता से बनी आत्मनिर्भर
(पृष्ठ – 02)

जीविका से जुड़कर
आत्मनिर्भर बनी सपना देवी
(पृष्ठ – 03)

स्वरोजगार से
ज्योति के जीवन में आया उजाला
(पृष्ठ – 04)

डिजिटली सशक्त जीविका :
बिहार में लोकओएस एप से सामुदायिक संगठनों में पारदर्शिता की नई पहल

जीविका ने ग्रामीण विकास और आजीविका संवर्धन के क्षेत्र में डिजिटाइजेशन को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया है। जीविका के अंतर्गत क्रियान्वित त्रिस्तरीय सामुदायिक संरचना स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघ ग्रामीण महिलाओं की आत्मनिर्भरता और आर्थिक प्रगति की आधारशिला है। इन संस्थाओं में वित्तीय प्रबंधन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से यह सुनिश्चित होता है कि कौन से सदस्य किस गतिविधि से जुड़ी है और राशियों का व्यय किस मद में हो रहा है। साथ ही संसाधनों का प्रभावी उपयोग कैसे किया जाएगा यह भी जानकारी मिलती है। इस वित्तीय एवं प्रशासनिक प्रबंधन को और अधिक सशक्त, पारदर्शी और सुगम बनाने के लिए जीविका परियोजना द्वारा डिजिटाइजेशन की दिशा में ठोस कदम उठाया गया है।

लोकओएस एप : डिजिटलीकरण का आधार स्तंभ :

लोकओएस, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा विकसित एप्लिकेशन है, जो सामुदायिक संस्थाओं के डिजिटाइजेशन का आधार बन गया है। इस एप के माध्यम से स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघ के सदस्यों का पंजीकरण, सामुदायिक संस्थाओं की विवरणी और उनसे संबंधित सभी गतिविधियों का वास्तविक समय में संधारण के साथ–साथ अनुश्रवण एवं निगरानी की जा रही है।

इस एप में सदस्यों की उपस्थिति, बचत, ऋण वितरण, ऋण वापसी जैसी वित्तीय गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दर्ज की जा रही है। राज्य और जिला स्तर पर इसका उपयोग वेब एप्लीकेशन के माध्यम से किया जा रहा है, जबकि सामुदायिक संगठन से जुड़े सामुदायिक संगठन कार्यकर्ता इसे मोबाइल एंड्रॉयड एप के माध्यम से संचालित करते हैं। यह प्रणाली डेटा तैयार करने, सत्यापित करने और विश्लेषणात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने में सक्षम है, जिससे सामुदायिक संगठनों की निर्णय लेने की क्षमता बढ़ी है।

लोकओएस एप का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह ई–केवाईसी प्रणाली के माध्यम से डेटा की पुनरावृत्ति को रोकता है और सभी सूचनाओं को एकीकृत मंच पर सुरक्षित रखता है। इस एप का उपयोग जीविका मित्र, ग्राम संगठन के बुककीपर और संकुल स्तरीय संघ के मास्टर बुककीपर करते हैं। इससे सामुदायिक संगठनों का प्रबंधन और अधिक मजबूत, पारदर्शी और जवाबदेह बन गया है।

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

लोकओएस एप के सफल और सहज संचालन के लिए जीविका द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इन प्रशिक्षणों के माध्यम से कैडर, कर्मियों और सामुदायिक संगठन कार्यकर्ताओं को तकनीकी जानकारी प्रदान की गई है, जिससे वे इस एप का उपयोग सुचारु रूप से कर सकें।

प्रखंड स्तर पर हेल्प डेस्क और डिजिटल सखी की भूमिका

तकनीकी समस्याओं के त्वरित समाधान और एप के सफल क्रियान्वयन के लिए प्रत्येक प्रखंड स्तर पर हेल्प डेस्क की स्थापना की गई है। यहाँ प्रशिक्षित डिजिटल सखियाँ कार्यरत हैं, जो मोबाइल एप्लिकेशन संचालन में दक्ष हैं। ये लोकओएस से संबंधित मूलभूत समस्याओं का समाधान करती हैं। इन्हें सी.आर.पी. पॉलिसी के अनुसार प्रत्येक महीने अधिकतम 20 कार्य दिवस के लिए दैनिक मानदेय दिया जाता है।

डेटा सत्यापन और अद्यतन प्रक्रिया

पूर्व में बने सामुदायिक संगठनों और स्वयं सहायता समूहों, जिनके प्रोफाइल पहले से ही जीविका के एम.आई.एस. सिस्टम में मौजूद हैं, उनका सत्यापन लोकओएस द्वारा किया जा रहा है। यह कार्य समूह की बैठक के दौरान जीविका मित्रों द्वारा किया जाता है। इसके अलावा सभी नए समूहों की प्रोफाइल प्रविष्टि, सदस्य विवरणी और राजस्व ग्राम व कैडर के साथ सही मैपिंग सुनिश्चित की जा रही है। लोकओएस एप के माध्यम से समूहों के सभी प्रकार के वित्तीय लेन–देन को डिजिटाइज किया जा रहा है। इसमें प्रत्येक समूह के बचत खाता और ऋण खाता की जानकारी दर्ज की जाती है। समूह के सभी सदस्यों द्वारा कितनी बचत की गई है, कितना ऋण लिया गया है, कब ऋण की वापसी की है और वर्तमान देयता क्या है आदि विवरणी भी प्रविष्ठि की जा रही है।

पारदर्शिता और विश्वास की नई मिसाल

लोकओएस एप ने जीविका के सामुदायिक संगठनों में पारदर्शिता, जवाबदेही और डेटा प्रबंधन को नई दिशा दी है। इससे न केवल निर्णय लेने की प्रक्रिया मजबूत हुई है, बल्कि सामुदायिक संगठन से जुड़े सदस्यों का संगठन के प्रति विश्वास और जुड़ाव भी बढ़ा है। बिहार में लोकओएस एप ने डिजिटाइजेशन की दिशा में एक नई क्रांति की शुरुआत की है। यह न सिर्फ वित्तीय प्रबंधन को सरल बना रहा है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल युग से जोड़ते हुए उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बना रहा है।

संगीता दीदी : समूह की सहायता से बनी आत्मनिर्भर

गया जिले के चंदौली प्रखंड के विशुनगंज गाँव की रहने वाली संगीता कुमारी, उमा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। वह रचना जीविका महिला ग्राम संगठन और सहारा जीविका महिला विकास स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड, चंदौती की भी सदस्य हैं। कभी परिवार की आर्थिक तंगी और घरेलू जिम्मेदारियों के कारण परेशान रहने वाली संगीता ने आज अपने दम पर और जीविका के सहयोग से आत्मनिर्भर बन गई है।

संगीता कुमारी का जीवन पहले एक साधारण गृहिणी की तरह गुजर रहा था। परिवार की आय सीमित थी, जिससे परिवार का भरण–पोषण मुश्किल से होता था। वर्ष 2013 में जब वह उमा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं तभी से उनके जीवन में बदलाव की शुरुआत हुई। समूह में जुड़ने के बाद उन्होंने बचत और वित्तीय अनुशासन के महत्व को सीखा। समूह की बैठकों में भाग लेने और प्रशिक्षण प्राप्त करने से उनमें आत्मविश्वास बढ़ा। इसके बाद वह जीविका मित्र के रूप में भी कार्य करने लगी।

वर्ष 2016 में संगीता ने समूह से ऋण लेकर अपने गाँव विशुनगंज में एक श्रृंगार की दुकान खोली। शुरुआत में दुकान के संचालन में कई चुनौतियाँ थीं, लेकिन समूह की दीदियों और उनके पति के निरंतर सहयोग से सभी चुनौतियों को पार करने में सफलता पायी। दुकान में साज–सज्जा का सामान, श्रृंगार उत्पाद, बच्चों का खिलौना आदि रखकर उन्होंने अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया। धीरे–धीरे ग्राहकों का विश्वास बढ़ा, जिससे दुकान की बिक्री बढ़ने लगी और आमदनी भी होने लगी।

आज संगीता कुमारी की पहचान एक आत्मनिर्भर एवं लखपति दीदी के रूप में हो चुकी है। वह न केवल अपने परिवार को सम्मानजनक ढंग से पालन–पोषण कर रही हैं, बल्कि अपने गाँव की अन्य महिलाओं को भी समूह से जोड़कर स्वरोजगार के लिए प्रेरित कर रही हैं।

संगीता दीदी की कहानी यह साबित करती है कि जीविका के सहयोग और आत्मविश्वास के बल पर कोई भी महिला अपनी परिस्थितियों को बदल सकती है और समाज में अपनी अलग पहचान बना सकती है।

समूह से जुड़कर बदली जिंदगी की दिशा

आरती देवी, नवादा जिला के पकरीबरावाँ प्रखण्ड के कबला पंचायत अंतर्गत कबला गाँव की रहने वाली हैं। उनके दो बच्चे हैं। समूह से जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी। परिवार का भरण–पोषण करने के लिए आरती देवी और उनके पति दैनिक मजदूरी का कार्य करते थे। अस्थायी आय के कारण बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित होती थी और वे नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाते थे।

इस बीच आरती देवी का जुड़ाव सरस्वती जीविका स्वयं सहायता समूह से हुआ, जो संन्यासी जीविका महिला ग्राम संगठन और शगुन जीविका महिला विकास स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड के अंतर्गत संचालित है। समूह से जुड़ने के बाद आरती देवी नियमित रूप से प्रति सप्ताह समूह की बैठक में भाग लेना शुरू किया और विभिन्न गतिविधियों को समझने लगीं। वह समूह की बैठक में प्रति सप्ताह 10 रूपये बचत करने लगी। समूह से उन्होंने 60,000 रुपये ऋण लिया, जिससे वह खाद एवं बीज की दुकान खोली। आरती देवी और उनके पति ने मिलकर मेहनत से दुकान चलाई, जिससे उनकी आमदनी लगातार बढ़ने लगी।

आर्थिक सुधार के साथ उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। अब उनके बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते हैं। आरती देवी स्कूल की फीस, कॉपी–किताब और अन्य जरूरतों को आसानी से पूरा कर रही हैं। उन्होंने दुकान में एक फोटो कॉपी मशीन भी लगाई है, जिससे उन्हें लगभग 200 रुपये प्रतिदिन आय हो जाती है। समूह से ली गई 60,000 रुपये का ऋण किस्तों में ब्याज सहित समूह में बापस कर रही है। वर्तमान में उनकी मासिक आय लगभग 7 हजार रूपये है।

आज आरती देवी न केवल आत्मनिर्भर हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा भी बन चुकी हैं। गाँव की कई महिलाएँ उन्हें देखकर स्वयं सहायता समूह से जुड़ रही हैं और अपने जीवन में बदलाव ला रही हैं। आरती देवी का कहना है कि, "समूह से जुड़ने के बाद मेरी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ है, अब मेरा परिवार खुशहाल जीवन जी रहा है।"

जीविका से जुड़कर आत्मनिर्भर बनी सपना देवी

सपना देवी, अरवल जिला के करपी प्रखण्ड अंतर्गत कोचहसा पंचायत के शंकरपुर गांव की रहने वाली हैं। उनकी उम्र 40 वर्ष है। वह 9वीं पास हैं। उनके परिवार में पाँच सदस्य हैं– पति, दो पुत्र और एक पुत्री। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। पति एक निजी कंपनी में काम करते थे, जिससे घर का खर्च मुश्किल से चलता था। इस कारण बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना संभव नहीं था।

वर्ष 2017 में सपना देवी नंदनी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। यह समूह राखी जीविका महिला ग्राम संगठन और आँचल जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से संबद्ध है। समूह में जुड़ने के बाद उन्होंने नियमित बचत शुरू की और समूह की बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं। उन्होंने समूह से 5,000 रुपये ऋण लेकर श्रृंगार की दुकान की शुरूआत की। मेहनत और लगन से उन्होंने अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया और बाद में समूह से 1,00,000 रुपये ऋण प्राप्त कर उसी दुकान में ब्यूटी पार्लर की शुरूआत की।

आज सपना देवी की मासिक आय लगभग 40,000 रुपये है। इस आय से वह न केवल अपने परिवार का भरण–पोषण अच्छी तरह कर पा रही है, बल्कि बच्चों की शिक्षा और घर की जरूरतों को भी पूरा करने में सक्षम हुई है। अब उनके पति भी एक अन्य दुकान खोलने की योजना बना रहे हैं। दुकान की आय से सपना देवी 70,000 रुपये का ऋण भी वापस कर चुकी हैं जबकि शेष राशि भी नियमित रूप से अदा कर रही हैं।

सपना देवी का कहना है कि "जीविका से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया है। पहले हम दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करते थे, आज हम सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं। अब इच्छा है कि जीविका की सहायता से अपना व्यवसाय और आगे बढ़ाऊ और अन्य महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करूँ।"

रंग-बिरंगे दीए और स्वरोजगार ने बदली निर्मला देवी की आर्थिक स्थिति

निर्मला देवी मुजफ्फरपुर जिला के सरैया प्रखंड अंतर्गत बहिलवाड़ा गोविंद पंचायत के ठिकहा कोठी गाँव की रहने वाली हैं। बचपन से ही उन्होंने गरीबी और संघर्ष को करीब से देखा। उनके पिता रिक्शा चलाकर परिवार का भरण–पोषण करते थे। जब निर्मला मात्र 13 वर्ष की थीं, तभी उनका विवाह कर दिया गया था। ससुराल में भी गरीबी ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। उनके पति मिट्टी के बर्तन बनाने का कार्य करते थे, जिससे परिवार का भरण–पोषण ठीक से हो जाता था। इसी बीच उनके ससुर का निधन हो गया, जिससे उनपर परिवार की जिम्मेदारियाँ और बढ़ गयी। दो बेटे और एक बेटी का परवरिश करना निर्मला के लिए बहुत कठिन हो गया था।

परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए उन्होंने अपने पति के साथ बाहर जाकर काम करने का निश्चय किया। ऐसे में वह परिवार सहित गाँव के बाहर जा कर पानी–पुरी बेचने का कार्य करने लगीं। हालांकि इस काम से ही उनकी आर्थिक स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ। करीब पाँच वर्षों तक बाहर रहने के वह अपने गाँव लौट आईं। इसी बीच, गाँव में जीविका स्वयं सहायता समूह का गठन हो रहा था। समूह के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद निर्मला देवी वर्ष 2013 में "चमेली जीविका स्वयं सहायता समूह" से जुड़ गई। समूह में जुड़ने के उपरांत इन्होंने पहली बार समूह से 20,000 रुपये का ऋण लिया और गाँव में ही मिट्टी के बर्तन बनाने तथा पानी पुरी बेचने का व्यवसाय शुरू किया। दीपावली के अवसर पर उन्होंने मिट्टी के दीए और मूर्तियाँ बनाकर गाँव–गाँव में बेचीं, जिससे उन्हें अच्छा लाभ हुआ। धीरे–धीरे उन्होंने ऋण भी चुका दिया और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया।

आज निर्मला देवी मिट्टी के बर्तन के कार्य से प्रति माह लगभग 3,000 से 4,000 रुपये तथा पानी पुरी बेचकर 8,000 से 10,000 रूपये तक की आमदनी कर लेती है। अपनी मेहनत और लगन से उन्होंने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है। उनकी बेटी इंटर तक पढ़ाई कर चुकी है, बड़ा बेटा एक निजी कंपनी में काम करता है, जबकि छोटा बेटा मैट्रिक की पढ़ाई कर रहा है।

निर्मला देवी का जीवन आज आत्मनिर्भरता की मिसाल है। जिन हाथों ने कभी मिट्टी से दीए बनाए, उन्हीं हाथों ने अपने परिवार के जीवन में उजाला फैलाया है।

स्वरोजगार से ज्योति के जीवन में आया उजाला

बेगूसराय जिला के खोदाबंदपुर प्रखंड की ज्योति रानी आज "लखपति दीदी" के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि अगर मन में हिम्मत और कुछ कर दिखाने की लगन हो, तो कोई भी परिस्थिति बड़ी नहीं होती। खोदाबंदपुर प्रखंड के एक सामान्य परिवार की ज्योति रानी का जीवन पहले काफी संघर्षपूर्ण था। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी और परिवार का गुजारा मुश्किल से चलता था। पति की आमदनी अनियमित थी, जिससे घर की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती थीं। कभी बच्चों की पढ़ाई रुक जाती, तो कभी घर के खर्च पूरे नहीं हो पाते थे। इन परिस्थितियों में जीवन जीना उनके लिए एक चुनौती से कम नहीं था।

ज्योति बताती हैं कि जीविका से जुड़ने से पहले जीवन बहुत कठिन था। उस समय कोई सहारा नहीं था। वह कहती हैं कि "घर के हालात ऐसे थे कि कभी–कभी दो वक्त का खाना जुटाना भी मुश्किल हो जाता था।" लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। वर्ष 2018 में उन्होंने अपने गाँव में चल रहे एक स्वयं सहायता समूह की बैठक में भाग लिया। महिलाओं की बातों और उनके आत्मविश्वास को देखकर ज्योति ने भी स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का निर्णय लिया। यह कदम उनके जीवन में एक नया मोड़ लेकर आया।

वर्ष 2018 में वह विजय जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने नियमित बचत शुरू की और बैठकों में भाग लेने लगीं। समूह की दीदियों से प्रेरणा लेकर उन्होंने आत्मनिर्भर बनने का सपना देखा। धीरे–धीरे उन्होंने यह सोचना शुरू किया कि घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए स्वरोजगार ही सबसे बेहतर रास्ता है।

काफी विचार–विमर्श के बाद ज्योति ने एक जनरल स्टोर खोलने का निर्णय लिया। शुरुआत के लिए उन्होंने समूह से ऋण लिया। कुल मिलाकर उन्होंने अब तक एक लाख नब्बे हजार रुपये का ऋण प्राप्त किया। इस राशि से उन्होंने गाँव में एक छोटा जनरल स्टोर की दुकान खोली। शुरुआत में बिक्री बहुत कम थी, लेकिन ज्योति ने हिम्मत नहीं हारी। रोज सुबह से शाम तक दुकान पर बैठतीं, ग्राहकों से व्यवहार सुधारतीं और जरूरत के हिसाब से सामान की विविधता बढ़ाती रहीं।

धीरे–धीरे उनके व्यवसाय में स्थिरता आने लगी। दुकान से होने वाली आय से उन्होंने न केवल अपने घर की स्थिति सुधारी, बल्कि अपने व्यवसाय का विस्तार भी किया। कुछ समय बाद उन्होंने किराना की दुकान भी शुरू की, जिससे उनकी आमदनी और बढ़ गई। आज ज्योति की मासिक आय 15,000 से 20,000 रूपये तक पहुँच चुकी है। कभी दूसरों से उधार लेकर घर चलाने के मजबूर ज्योति आज दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत बन चुकी है।

ज्योति के जीवन में यह परिवर्तन केवल आर्थिक रूप से नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से भी महत्वपूर्ण रहा है। आज गाँव की महिलाएँ उन्हें "प्रेरणा दीदी" के नाम से जानती हैं। वे दूसरों को समूह से जुड़ने, बचत करने और छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती हैं। ज्योति का कहना है, "जीविका ने हमें आत्मविश्वास दिया, खुद पर भरोसा करना सिखाया और यह एहसास दिलाया कि महिलाएँ भी अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हैं।"

अब ज्योति का सपना है कि वह अपने व्यवसाय को और आगे बढ़ाएँ। वह चाहती हैं कि आने वाले समय में वे अपने जनरल स्टोर और किराना दुकान का विस्तार करते हुए इसे थोक विक्रय के स्तर पर ले जाएँ। इसके लिए वह अपने समूह से पुन : ऋण लेकर अपना व्यापार बढ़ाने की योजना बना रही हैं।

ज्योति रानी की यह सफलता की कहानी उन हजारों ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो सीमित साधनों में भी बड़ा सपना देखती हैं। आज ज्योति रानी का आत्मविश्वास और परिश्रम इस बात का प्रमाण है कि जब एक महिला को सही दिशा और सहयोग मिलता है, तो वह न केवल अपना बल्कि पूरे समाज को रौशन कर सकती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार